गृहवाटिका का महत्व

अंजली यादव, झरना पंडा एवं डॉ० ऊषा सिंह
स्नातकोत्तर विद्यार्थी, खाद्य एवं पोषण विभाग,[1]
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय,[2]
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय पूसा, समस्तीपूर, बिहार

शहरों एवं बड़े मकानों के आस-पास लोग खाली जमीन (जिसे लॉन कहते है) कि व्यवस्था करते है ताकि मकान को आकर्षित बना सके उसमें विभिन्न प्रकार के फूल, झाड़ियाँ, घास आदि लगाकर। परन्तु अगर उसी जमीन का अन्य तरह से उपयोग करे तो मकान ना कि सुन्दर और आकर्षित दर्शायेगा बल्कि लोगो के लिए लाभदायक भी साबित होगा। इस तरह के उद्यान को गृहवाटिका कहते है और तकनीक को किचन गार्डनिंग कहते है। गृहवाटिका में बनने वाले मेड़ों का प्रयोग कन्द-मूल वाली सब्जियों को उगाने के लिए उपयोग कर सकते है तथा लॉन के कोनो में छोटे-छोटे फलो के वृक्ष भी लगा सकते है जैसे - केला, पपीता,शरीफा, नींबू, अनार, कारौंदा आदि।

गृहवाटिका के लिए फसलों का चयन

गृहवाटिका के लिए कुछ चयनित सब्जियाँ तथा फल एवं फूल का उपयोग अपनी आवश्यकतानुसार किया जाता है, जिससे कुछ मुख्य इस प्रकार है:- पालक, मेथी, धनिया, सोया, सेम, लोबिया, तरोई, लौकी, खीरा, ककड़ी, कद्दू, परवल, मूली, गाजर, प्याज, लहसुन, फूल गोभी, शलजम, पत्तागोभी, मिर्च, टमाटर, बैंगन, शिमला मिर्च, भिण्डी, अदरक, आलू, अरवी आदि। इसके अतिरिक्त अपनी सुविधा एवं आवश्यकतानुसार फल जैसे- केला, पपीता, अंगूर, नींबू, अमरूद, स्ट्राबेरी आदि तथा दाने वाले मक्का, राजमा, मूंग आदि एवं सजावटी व फूल पौधे- कैक्टस, क्रोटन, मनीप्लांट, फर्न, पाम, डहेलिया, गुलदाउदी, गुलाब, गेंदा अन्य मौसमी पुष्प आदि के पौधे का चयन कर सकते है।

सब्जी गृहवाटिका की योजना

सब्जी गृहवाटिका की योजना परिवार के सदस्यों की संख्या उपलब्ध संसाधन एवं समय के अधार पर करनी चाहिए। लॉन की गृहवाटिका में किनारे की तरफ फल वृक्ष जैसे-केला, पपीता, मीठी नीम, करौंदा आदि लगाना चाहिए। इसके बाद आवश्यकतानुसार मचान बनाकर बहुवर्षीय सब्जियाँ जैसे-परवल, कुंदरू, सेम आदि चढ़ाना चाहिए। क्यारियों में मेड़ों पर मूली, गाजर, चुकन्दर, शलजम आदि को उगाना चाहिए। क्यारियों की चौड़ाई यथासंभव कम रखनी चाहिए। मौसम के अनुसार एक साथ एक से अधिक फसलें एक क्यारी में बोनी चाहिए। ~~जैसे-~~

बैंगन+पालक,
आलू+मूली,
आलू+पत्तागोभी,
भिण्डी+चौलाई,
बैंगन+मेथी,
मटर+टमाटर

आदि साथ-साथ उगाकर कम क्षेत्रफल से अधिकतम सब्जी प्राप्त की जा सकती है।

पॉलीहाऊस से सब्जी उत्पादन

अतः खुले खेत की तुलना में पॉलीहाऊस से अधिक उपज एवं पौधे तैयार करने में बहुत कम समय लगता है तथा संरक्षित वातावरण में खेती करने में और अनेक लाभ होते है जो निम्नांकित है-

- संरक्षित वातावरण द्वारा हम भूमि की उपयोगिता को बढ़ाकर फसल की उत्पादकता डेढ़ से दो गुना ज्यादा कर सकते है।
- सामान्यतः देखा गया है कि जनवरी के अंतिम सप्ताह में टमाटर की पौधे तैयार करने पर पॉली हाउस में 22 दिन में व खुले खेत में 77 दिन में टमाटर की पौधे तैयार होती है।
- एक अच्छी पॉली हाउस संरचना तथा तकनीकि के साथ

गृहवाटिका के लिए उगाई जाने वाली सब्जियों की बुआई का समय

सब्जियाँ	बुआई का समय
मिर्च	सितम्बर से मार्च
भिण्डी	जुलाई से अगस्त व फरवरी से मार्च
बैंगन	फरवरी से मार्च एवं जुलाई से सितम्बर
टमाटर	जुलाई से अगस्त एवं अक्टूबर से नवम्बर
लोबिया	मार्च–अप्रैल एवं जुलाई से अगस्त
आलू	नवम्बर
फूल गोभी	अक्टूबर–नवम्बर
पत्ता गोभी	अक्टूबर–नवम्बर
ब्रोकली	नवम्बर
मूली	वर्षभर
लौकी	फरवरी से मार्च एवं जून से जुलाई
खीरा	फरवरी से मार्च एवं जून से जुलाई
पालक	अक्टूबर–नवम्बर

हम सालभर विभिन्न बेमौसमी सब्जियों का उत्पादन कर सकते है।

- संरक्षित वातावरण में फसल की गुणवत्ता अधिक होती है । उपज का रंग एवं आकार भी बाहर की अपेक्षा अच्छा होता है। बाहर की फसल पर वातावरण के कारकों जैसे–कम या अधिक तापमान, वर्षा, पाला आदि का ज्यादा असर पड़ने से उपज अच्छी नहीं होती।
- ज्यादातर सब्जियाँ परम्परागत होती है। इनके बीज उत्पादन की प्रमुख समस्या है। संरक्षित वातावरण के द्वारा हम इस समस्या का निदान कर सकते है तथा वातावरण के दुष्प्रभावों से फसल को बचाकर अधिक गुणवत्ता वाले बीज प्राप्त कर सकते है।

पॉली हाउस के अंदर पौधे तैयार करने की अवस्थाऐ

- थैलियों की तैयारी– इसके लिए पॉलीथीन की छोटी–छोटी थैलियाँ जिसका आकार 10x6 से.मी. और 200–300 गज मोटी हो का चयन करते है। इनकी पेंदी में 2–3 छिद्र बना लेते है तत्पश्चात उनमें सड़ी हुई गोबर या कम्पोस्ट खाद, मिट्टी व बालू 1:1:1 के अनुपात में मिलाकर थैलियों में भर देते है। दिसम्बर–जनवरी माह में तापमान कम रहता है जिससे बीज का जमाव होने में देरी होती है। अतः इनका पहले अंकुरण कर लिया जाय तत्पश्चात अंकुरित बीजों की बुआई की जाये। बुआई के पूर्व बीजों का पोषण कैप्टान या थीरम नमक दवा की 2.0 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से करना चाहिए।
- बुआई से पूर्व बीजों को अंकुरण कराना– अंकुरण कराने के लिए सर्वप्रथम बीजों को पानी में 24–36 घंटे भिगाते है। तत्पश्चात उन्हें एक सूती कपड़े या बोरे के टुकड़े में लपेटकर पॉली हाउस में रखते है या सड़ी हुई गोबर की खाद के अंदर 4–5 दिनों तक रखने पर बीजों में अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है।
- थैलियों में अंकुरित बीजों की बुवाई करना– अब इन बीजों को लेकर पहले से भरी हुई थैलियों में 2–3 बीजों की बुआई कर देते है। बड़े होने पर प्रत्येक थैलियों में एक या दो स्वस्थ पौधे छोड़ देते है और अन्य को निकाल देते है।
- थैलियों को पॉली हाउस में रखना– कद्दू वर्गीय सब्जियों के बीजों का जमाव 18–20 डिग्री सेंटीग्रेड पर हो जाता है और अच्छी बढ़वार के लिए पॉली हाउस का तापमान सामान्यताः 24–30 सेंटीग्रेड रखते है। जिससे पौधे की बढ़वार अच्छी होती है। पॉली हाउस में पौधों की देख–रेख– बीजों के जमाव के बाद थैलियों की मौसम के अनुसार समय–समय पर सिंचाई करते रहते है।

सिंचाई जहां तक हो सके फुहारे की सहायता से करें। यदि उनमें पोषक तत्वों की कमी होती है तो पॉली हाउस के घुलनशील एन.पी.के. मिश्रण व पर्णीय छिड़काव करना चाहिए। कोई खर–पतवार उग रहा हो तो हाथ द्वारा निकाल दें और यदि कीड़े व बीमारियों का प्रकोप दिखे तो उसका समुचित नियंत्रण करें। पौध–रोपण से 4–6 दिन पूर्व सिंचाई रोककर पौधों का कठोरीकरण करना चाहिए। पौधों के कठोरी करण से निम्न लाभ होते है–

1. जड़ों को उत्तम विकास
2. खेत में पौधों का शीघ्र विकास
3. खेत तैयार न होने की दशा में पौधे की बढ़ावर रोकना
4. रोग व कीट अवराधिता का विकास होना

पॉली हाउस में सब्जियों की पौधे तैयार करने में लाभः

1. एक से डेढ़ माह अगेती फसल ली जा सकती है।
2. वर्षा कम या अधिक, तापमान, ओला, कीड़े व रोग व्याधियों से पौधे की सुरक्षा की जा सकती है।
3. पौधों के लिए आवश्यक वातावरण प्रदान कर समय से पौधे तैयार किये जा सकते है
4. बीज दर कम होने से उत्पादन कम किया जा सकता है।
5. बाढ़ या सूखा के समय जब खेतों में कार्य करने लायक नहीं रहते है तो उस समय अलग से पौधे तैयार कर खेती समय पर की जा सकती है।